कि क्या तुम्हें गोविन्दपूर जानाही होगा—मैं अकेला किसतरह रहूँगा"—

कमला—तो क्या मैं तुम्हें अकेले छोड़ जाऊँगी—मैंभी जाऊँगी— तुम भी जाओगे— दफ़्तर जाकर जल्द फ़राग़त हो आओ—अगर देर करोगे तो हम और शतीश दोनों मिलकर खूब रोयेंगे—

श्रीश—मैं तो जा नहीं सक्ता—आजकल कोठी में ख़रीदका काम होरहा है—तुम चली जाओ—

कमला—आ—शतीश इधर आ—दोनों बैठकर रोयें—

शतीश एक पिंसल लियेहुये चूस रहा था—मांकी आवाज़ सुनकर खिल खिलाता हुआ उधर आया—कमला भी रो न सकी शतीश को गोद में लेकर प्यार करनेलगी—

कमला ने फिर पूँछा —"तो फिर क्या कहते हो"—

श्रीश—तुम जाओ—मैं मने नहीं करता—आजकल ऐसे ज़रूरी काम आपड़े हैं कि मेरा जाना नहीं होसक्ता—

यह सुनकर कमला रूठगई—और उधर से मुँह फेरलिया—कुछ बोलतीही नहीं—

श्रीश के क़लम में स्याही मौजूद थी—क़लम लेकर उसने कमला के माथेपर रोशनाई लगादी—

कमला—हँसकर बोली—"देखो मैं तुम्हें कितना चाहतीहूँ"—यह कहकर उसने श्रीश के कन्धोंपर दोनों हाथ रक्खे और प्यार करने के बहाने वह रोशनाई श्रीश के गालोंपर लगा दी—इस तौर पर दूसरी लड़ाई का ख़ात्मा हुआ—कमला ने कहा अगर तुम अभी नहीं

जासक्के तो मेरे जाने का बन्दोबस्त करदो–

श्रीश–पलटोगी कब–

कमला–यह क्यों पूछतेहो–अगर तुम न गये तो मैं वहां कितने दिन रहसक्ती हूँ–

श्रीशचन्द्रने कमला को गोविन्दपूर भेज दिया–मगर हमें तसदीक़ के साथ मालूमहुआ है कि उस मर्तबा कोठी के कार व बार में बहुत कम मुनाफ़ा हुआ–

चौदहवां परिच्छेद ॥

नगेन्द्रो के अँधेरे घरमें उजालासा होगया–कमला का हँसताहुआ चेहरा देखकर सूरजमुखी के आंसूभी सूखगये–कमला घरमें पहुँचने के थोड़ीदेर बादही सूरजमुखी का जूड़ा बांधने बैठी–अरसेसे सूरजमुखीने अपनेबालों की ख़बरभी न ली थी–कमला ने कहा कि

बालों में दो फूल लगादूं–सूरजमुखी नहीं २ करतीही रही कमला ने चुपकेसे दोफूल लगा दिये–जब औरतोंने देखा तो कमला कहने लगी–"देखतीहो–बूढ़े मुँह मुहासे–जूड़े में फूल लगायेहैं"–

कमला की आमद सुनकर नगेन्द्रो भी घरमें आया–कमला ने प्रणाम किया–नगेन्द्रोने पूछा–

"कमला–तुम कैसे आगई"–कमला ने निहायत संजीदगी से जवाबदिया–"तुम्हारा भाञ्जा पकड़लाया"–नगेन्द्रो ने भाञ्जेसे कहा "क्यों बे–इधर तो आ"–

यह कहकर उसे गोदमें लेकर खूबसाप्यार किया–उसने मामूं की मोंछें पकड़कर खींचलीं और लार टपकादी–कमला की रोशनी ने

नगेन्द्रो के बालों की स्याही भी किसीक़दर कमकरदी–

कुन्दन के साथ कमला की मुलाक़ात इसतौर पर हुई–

कमला "अरे कुन्दी–कुन्दी मुन्दी दुन्दी-क्योंरी अच्छी तो है"–

कुन्दन के मुँहसे जवाब न निकला–थोड़ी देर बाद बोली–"अच्छीहूँ"–कमला–अच्छी हूँ बहिन–फूटे मुँहसे यह नहीं निकलता–देख मुझे बहिन कहना नहींतो तेरे बाल नोचडालूं गी–और इतनी चुटकियां लूंगी कि सारा बदन नीला होजायगा–

कुन्दन ने बहिन कहना शुरू किया–जब कुन्दन कलकत्तेमें थी उसीवक़्त से वहकमला की मेहरबानियां देख २ कर उससे मोहब्बत करती थी–इसक़दर ज़माना गुज़र जाने से

कुन्दन में झिझक आगई थी—मगर कमला की शिगुफ़्तह मिज़ाजी और हमदर्दी ने उस मुहब्बत को ताज़ह करदिया—दोनों के दिल एक दूसरे से मोहब्बत करने लगे—

थोड़ेदिनों बाद कमला कलकत्ते पलट जाने की तय्यारियां करनेलगी—सूरजमुखीने कहा कि "बहिन—अभी नहीं—थोड़ेदिनों और रहलो—अगर तुम चलीगईं तो मेरी जान की खैर नहीं"—

कमलाने जवाबदिया—"तुम्हारा काम किये बगैर न जाऊँगी"—

सूरजमुखी काम क्या करोगी ?—

कमलाने मुँहसे तो कहा "तुम्हारा श्राद्ध"—मगर दिलमें कहा तुम्हें मुसीबत से बचाऊंगी—

कुन्दन ने जब कमला के जाने की ख़बर पाई तो अपने कमरे में जाकर चुपके २ रोने

लगी कमला भी दबे पांव पीछे २ पहुँची—कुन्दन तकिये पर मुंह रक्खे हुये रो रहीथी—कमला बैठकर उसका जूड़ा बांधने लगीं—कमला को जूड़ा बांधने का मर्ज़ था—

जब जूड़ा बांध चुकी तो कमला ने कुन्दन का शिर उठाकर उसकी पेशानी अपनी गोदमें रक्खी आंचल से उसके आंसू पोंछे—इन सब कामों के बाद पूछा "ढुन्दी—रोती क्यों है"—

कुन्दन बोली—"तुम जाती क्यों हो"—

कमला को किसी क़दर हँसी आई—मगर आंखों में आंसू भरे हुये थे उन्होंने वह हँसी न मानी—बे कहे सुने कमला के गोरे २ गालों पर आंसू बहनेलगे—धूपमें बारिश हुई—

कमला ने कहा—"मेरे जाने पर तू रोती क्यों है"—

कुन्दन—तुम मुझे चाहती हो—

कमला—क्यों—क्या और कोई नहीं चाहता?—

कुन्दन—ने कुछ जवाब न दिया—

कमला—तुझे कौन नहीं चाहता?—क्या सूरजमुखी ख़फ़ा रहती है?—मुझसे न छिपाना—

कुन्दन चुप—

कमला—क्या भाई भी ख़फ़ा रहते हैं?—

कुन्दन चुप—

कमला—अगर मैं तुझे चाहती हूँ और तू मुझे चाहती है तो मेरे साथ क्यों नहीं चलती?—

कुन्दन ने फिर कुछ जवाब न दिया—

कमला—क्यों चलेगी ?—

कुन्दन ने सर हिलाकर कहा "नहीं"—कमला का हँसता हुआ चेहरा संजीदह होगया—बड़ी मोहब्बत से कमला ने कुन्दन का

सर अपनी गोद से उठाया और उसके कन्धों पर दोनों हाथ रखके कहने लगी—"कुन्दन—सच २ बतायेगी"—

कुन्दन—क्या—

कमला—जो बात पूछूँ सच २ बताना—मैं तेरी बहिन हूँ—मुझसे न छिपाना—मैं किसी से कहूंगी नहीं—

कुन्दन—क्या पूछती हो?—

कमला—तू भाई को बहुत चाहती है—क्यों है ना?—

कुन्दन ने जवाब न दिया—कमला की गोद में अपना मुँह छिपाकर रोने लगी—

कमला बोली—मैं समझती हूँ कि तू जान देती है—तू जान दे कुछ हर्ज नहीं—मगर तेरे साथही साथ और लोगों की जानें भीजाती हैं—

कुन्दन ने कमला की गोदसे सर उठाया और उसके मुंह की तरफ़ तकनेलगी–

कमला मतलब समझगई कहनेलगी–"अरी कमबख़्त–तेरी अक्ल कहांगई तुझे अबतक न सूझा कि"–मुंह की बात मुँहही में रहगई–कुन्दन का सर फिर कमला की गोदमें गया–कुन्दन हज़ार आंसुओं से रो रही थी–बच्चों की तरह बेबश होकर रोती थी–वह ख़ुद तो रो रही थी मगर कमला के आंसुओं से भी उसके बाल भीग गये थे–

कमला जानती थी कि मोहब्बत किसे कहते हैं–दिलही दिल में वह कुन्दन की हालतपर तरस खाती थी–कुन्दन के आंसू पोंछ कर कहने लगी–"कुन्द"–

कुन्दन ने फिर सर उठाया–कमला कहने लगी–"मेरे साथ चल"–

कुन्दन की आँखों से फिर टप टप आंसू गिरे–

कमला बोली–"तेरे बग़ैर गये नहीं बनता–यह भरा पुरा घर तबाह हुआ जाता है"–

कुन्दन के आंसू और भी जोश के साथ उबलने लगे–

कमला–चलेगी–ख़ूब समझ ले–

कुन्दन ने बहुत देर के बाद अपने आंसू पोंछे–अच्छी तरह उठकर बैठगई और कहने लगी–"चलूँगी"–बहुत देर के बाद क्यों? कमला इस बात को समझ गई–समझी कि कुन्दन ने औरों की ख़ातिर से अपने ऊपर मुसीबत गवारा की–सूरजमुखी और नगेन्द्रो दोनों की भलाई के लिये उसने नगेन्द्रो को छोड़ने का अक़बाल किया–मगर कुन्दन ने अपनी भलाई का ख़्याल न किया–

पन्द्रहवां परिच्छेद॥

इधर हरीदासी जोगिन आकर गाने लगी—उस वक्त सूरजमुखी वहां मौजूद थी—उसने गाना सुनने के लिये कमला को बुलवाया—कमला कुन्दन को साथ लिये हुये चली आई—जोगिन गाने लगी—

नये जो बना का फूल कहो फूला कहां—नये
कांटा जो लागे कुछ सोचनाहीं
फुलवा को तोड़ूं मैं पाओं जहां

कमला ने जो सुना तो त्योरियों पर बल आगये—कहने लगी—

वाहरी जोगिन—तूतो बड़ी फूहड़ मालूम होती है—क्या तुझे यही चीजें आती हैं?"—

जोगिन—क्यों?

कमला—क्यों? अरे कोई एक बबूल की

डार तो तोड़ लाना—मैं इस जोगिन को दिखादूँ कि कांटा लगने में क्या मज़ा होताहै—

सूरजमुखी किसी क़दर मुसकरा कर कहने लगी—"ऐसे गाने कहीं बहू बेटियों में नहीं गाये जाते और कोई चीज़ गाओ"—

कमला—तुम्हारा जी चाहे तुम सुनो—मैं तो जाती हूँ—

यह कह कर कमला उठगई—सूरजमुखी भी वहां न ठहरी—और जो औरतें वहां मौजूद थीं उनमें कुछ तो उठगईं और कुछ बैठी रहीं—कुन्दन वहीं रही—

उसकी वजहथी—कुन्दन ने गाने का तो ख़्याल भी न किया—वह उसवक्त अपनी मुसीबतों को सोचरही थी जहांकी तहां बैठीरही—हरीदासी ने गाना मौकूफ़ किया—इधर उधर की बातें करनेलगी जब गाना बन्द होगया तो

और सब औरतें भी उठकर अपना २ काम करनेलगीं—सिर्फ़ कुन्दन वहां रहगई—कुन्दन को तनहा पाकर हरीदासी ने बहुतसी बातें कीं—कुन्दन ने कुछ बातें सुनी बहुतसी बातें नहीं सुनीं—

सूरजमुखी दूरसे देख रही थी—जब कुन्दन और जोगिनमें अच्छी तरह बातें होने लगीं उसवक्त सूरजमुखी ने कमला को बुलाकर दिखाया—कमला कहनेलगी—

"फिर इसमें हर्जही क्याहै—जोगिन औरत है मर्द तो नहीं"—

सूरजमुखी—औरतहै या मर्द इसका क्या ठीक—

कमला मुताज्जिब होकर बोली—"यह क्या"—

सूरजमुखी—मुझे शक होताहै कि कोई

मर्दुवा भेष बदलकर आयाहै—इसकाभी पता चलजायगा—अगर ऐसाहुआ तो कुन्दनबड़ी बदज़ात है—

कमला—ठहरो—मैं जाकर एक बबूल की डाल लियेआतीहूँ—इस मर्दुवे को दिखादूंगी कि कांटा लगने में क्या लुत्फ़ होताहै—

यह कहकर कमला बबूलकी डाल लेने चली—रास्ते में सतीश मिलगया—उसको अपनी मुमानी की सेंदूरकी डब्बी कहीं हाथलग गईथी—सेंदूर लेकर अपने गाल—नाक—पेशानी—पेट—वगैरह में खूबलगाया—यह देखकर कमला उधर मुतवज्जह होगई और जिसकाम को जारही थी उसे भूलगई—

इधर सूरजमुखी ने हीराको बुलाया—

हीरा का एक मर्तबह ज़िक्र होचुकाहै—उसकी उमर कोई २० बरस की थी—सिनके लि-

हाज़से वह सब दासियों में छोटी थी–मगर चूंकि काम काज में बहुत होशियार थी उसकी खातिर सबसे ज़्यादह होती थी–गोबिन्दपूर में वह रांड मशहूर थी मगर उसके स्वामी का हाल किसीको मालूम न था अभीतक उसको लोग बहुत नेक चलन समझते थे–मगरहीरा अपना बनाव सिङ्गार बहुत किया करती थी–

हीरा ने सकल व सूरत भी अच्छी पाई थी–गन्दुमी रंग–चमकती हुई बड़ी २ साफ़ आंखें–लम्बे २ काले काले बाल–बूटासा क़द–हीरा अंलाहिदह बैठकर गाया करती थी–और नौकरों को लड़वा कर खुद तमाशा देखती थी–खाना पकाने वालियों को अँधेरे में डराया करती थी–किसी को ग़ाफिल सोते हुये पाकर मुँह में चूना और कालख लगा देती थी–

हीरा में और बहुत से ऐब थे जिनका हाल

आयन्दा मालूम होगा इस जगह सिर्फ़ इसक़दर कह देना क़ाफ़ीहै कि इत्र या खुशबूदार तेल अगर उसको मिल जाताथा तो वह ज़रूर चुरा लेती थी–

सूरजमुखी ने हीरा को बुलाकर कहा– "इस जोगिन को पहचानती है"–

हीरा–नहीं–मैं जाती आती कहां हूँ जो किसी को पहचानूं–

सूरजमुखी–तुझे पता लगाना होगा कि यह जोगिन कौन है–और रहती कहांहै–और कुन्दन से इस क़दर घुल २ कर बातें क्यों करतीहै–अगर इन सब बातों का पता लगा लायेगी तो मैं तुझे एकनईबनारसी सारी दूंगी–

बनारसी सारी का नाम सुनकर हीरा की बाछें खिल गईं–पूछने लगी कि पता लगाने के लिये कब जाना होगा–

सूरजमुखी—जब तेरी खुशी हो—लेकिन अगर इस वक़्त पीछे२ न गई तो मुशकिल से पता चलेगा—

हीरा—मैं अभी जाती हूँ—

सूरजमुखी—मगर इसका ख़्याल रखना कि जोगिन को या और किसी को इसका भेद न मालूम हो—

इतने में कमला भी उधर आई—सूरजमुखी ने जो तदबीर कीथी उसका हाल बयान किया—कमला सुन कर बहुत खुश हुई—हीरा से कहने लगी—"और जो तुझ से होसके तो इस निगोड़ी जोगिनी के दो बबूल के कान्टे भी चुभोती आना—

हीरा—हां—यह कौन बड़ी बातहै—मगर फिर मैं ख़ाली सारीही न लूंगी —

सूरजमुखी—और क्या लेगी?—

कमला बोली—"इसे एक मर्दुवा चाहिये—इसकी शादी करदो"— सूरजमुखी—यह भी होजायगा—क्यों री—मेरे नन्दोई से ब्याह करेगी—अगर मंजूर हो तो कमला सब ठीक ठाक कर रक्खें—

हीरा—देखाजायगा—मगर मुझसे ब्याह करने के क़ाबिल तो सिर्फ़ एक शख़्श है—

सूरजमुखी—कौन—

हीरा—यम

सोलहवां परिच्छेद॥

उसीरोज़ सूर्य्य—अस्तहोने के बाद ज़नाने मकान के बाग़चेमें एकदरख़्त के नीचे कुन्दन बैठीहुई थी—सामने बड़ासा खुशनुमा तालाब जिसका पानी निहायत साफ़ शफ़्फ़ाफ़ था—पाठकों को यादहोगा कि इस तालाब के चारों

तरफ़ फूलोंका बाग़चा था—इसी बाग़चे में एक जानिब एक छोटीसी संगमरमर की बारादरी—बारादरी के सामने तालाबके पानीतक पहुँचने के लिये पक्की सीढ़ियां—सीढ़ियों के दांये बांये मोल-सिरी के दो बड़े२ पुराने दरख़्त उन्हीं मेंसे एक मोलसिरी के सायेमें एक पक्की सीढ़ीपर कुन्दन बैठीहुई है और तालाब के साफ़ पानी में सितारों के चमकते हुये अक्स की झिलमिलाहट देखरही है—ठण्डी २ हवा तालाब में हलकी २ लहरें पैदा करतीहुई मोलसिरी के पत्तों को मज़े मज़े से जुम्बिश देतीहै और उसके फूलोंकी खुशबू चारोंतरफ़ फैलातीहै—कुन्दन के शिरपर और इधर उधर मोलसिरी के फूल गिररहे हैं—बेला गुलाब और जूही वग़ैरह की खुशबू भी आती जाती है—आसमान पर कहीं२ दो एक बादल रास्ता भूलकर भट-

क्ते फिरतेहैं—दो एक तारे किसी दिली सदमें की वजहसे टूटरहे हैं—कुन्दन दिली सदमें की वजहसे बैठीहुई सोचरही है—सोच क्या रहीहै—इसतौर पर—

"सबतो पहलेही चलबसे—मां मरी—भाईमरा—बाबा मरा—मैं क्यों न मरगई—अगर जीती भी रही तो यहां क्यों आई—क्या भला इन्-सान मरकर सितारा होताहै—अगर ऐसाहै तो बाबा और मां दोनों सितारे होंगे—मैं इतना रोतीहूँ—जानेभी दो उसका ख़्याल न करूँगी—बहुतरोना आताहै—रोने से होगा क्या—मेरे नसीबोंमें तो रोनाही बदाहै—नहीं तो मां—फिर वही ख़्याल—अच्छा अगर जान देदूँ तो कैसा—किसतौर पर—पानीमें डूबकर—अच्छातोहै—मर कर मैं सितारह हूँगी—फिर—हां—देख तो सकूं-गी—रोज़२ देख सकूंगी—किसको—हाय किस

को—क्या मुंहसे नाम नहीं निकलसक्ता—हाय मैं वह नाम क्यों नहीं लेती—इसवक्त तो यहां कोई नहीं—कोई और न सुन पायेगा—तो वह नाम ज़बानपर लाऊँ और तो कोई है नहीं—खूब जी भरके नाम लेलूं—न—नग—

नगेन्द्रो—मेरे नगेन्द्रो—नगेन्द्रो—नगेन्द्रो—नगेन्द्रो—नगेन्द्रो—मेरे नगेन्द्रो—प्यारे नगेन्द्रो—मेरे नगेन्द्रो—हाय मैं कौन—सूरजमुखी के नगेन्द्रो—हाय मैं हज़ारों मर्तबः नाम लूँ—मगर मैं उनकी हूँ कौन—अगर बजाय—सूरजमुखी के उनका व्याह मेरे साथ हुआ होता—हाय डूब मरना ही अच्छा है अगर मैं इस वक्त डूब मरी तो कल लाश उभर आयेगी—सब को ख़बर हो जायेगी—सुनकर नगेन्द्रो—फिर नाम ले लूँ—नगेन्द्रो—नगेन्द्रो—नगेन्द्रो—नगेन्द्रो सुनकर क्या कहें गे—डूबना

ठीक नहीं—बदन ऐसा फूल जायेगा कि मैं देव-
नी हो जाऊंगी—शायद वह देखलें—यह न
सही—ज़हर खाकर तो मर सक्की हूँ—कौनसा ज़-
हर खाऊँ—ज़हर मिलेगा कहां—और कौन ला-
देगा—अगर किसी ने ला भी दिया तो मैं खा
सकूंगी—क्यों—खालूंगी—मगर आज नहीं—
कभी २ यह भी ख़्याल आता है कि वह भी
मुझे चाहते हैं—कमला कुछ कहती थी मगर
कहते २ रह गई—हो न हो वह यही बात है—
तो क्या यह बात सच है—मगर कमला को इस
बात की ख़बर कहां से हुई—हाय मुझसे पूछा
भी न गया—क्या वह मुझे चाहते हैं—अगर
चाहते हैं तो क्यों—रूप की वजह से या गुन
की वजह से—रूप! देखूं तो (यह कह कर कु-
न्दन पानी के पास गई— अंधेरे की वजह से
पानी में सूरत न नज़र आई—फिर अपनी ज-

गह पर पलट आई और कहने लगी) मेरी भी क्या बातें हैं—जो चीज़है ही नहीं उसका सोचना क्या—मुझसे ज़्यादह सूरजमुखी खूब सूरत है—मुक्ता—चन्द्रा—बामा सब मुझसे अच्छी हैं—मुझसे ज़ियादह खूब सूरत तो हीरा भी है—सूरत तो चूल्हे भाड़ में गई—रहा गुन—इस का हाल भी कुछ समझ में नहीं आता—जो कुछ हो मैं अपने दिल में यही ख़्याल कर-लूं कि वह मुझे चाहते हैं—झूट सही—झूठ को सच समझ कर मैं ज़िन्दह रहूँगी—मगर हाय—कलकत्ते जाने की जो ठहरी है—मुझसे तो न जाया जायगा—उन की सूरत को तरस जाऊं-गी—मुझसे न जाया जायगा—अगर न गई तो यहां क्या करूंगी—सूरजमुखी का ख़्याल झूठ हो या सच मगर यह तो ज़रूर मालूम होता है कि उन को मेरी वजह से अन्देशह है—क्या

मैं सूरजमुखी के एहसानात भूलकर उसको रंजदूंगी–नहीं तो फिर जानाही पड़ेगा–मगर हाय जाया न जायगा–तो फिर डूब मरनाही अच्छा–हाय बाबा–क्या तुम मुझे डूब मरने के लिये छोड़ गये थे–

कुन्दन हाथ शिरपर रखके रोनेलगी–उसवक़्त जिसतरह किसी अँधेरे घरमें यकायक रोशनी आजातीहै उसीतरह कुन्दन को वह ख़्वाब याद आगया–ख़्याल आतेही वह फ़ौरन् उठकर खड़ी होगई–

"हाय मैं सब भूलगई थी–अम्माने मुझे सूरत दिखाई थी–मुझ निबख़्ती के नसीबोंका लिखा अम्मा को मालूम था–तभी मुझे आसमान पर बुलाया था–हाय मैंने उनका कहना क्यों न माना–मैं क्यों न चलीगई–मैंने जान क्यों न दी–मैं अब भी देर कर रहीहूँ–क्यों

ऐसे वक्त जान नहीं दे देती—मैं अभी मरूंगी”—
यही सोचतीहुई **कुन्दन** आहिस्तह२ सीढ़ियोंपरसे उतरनेलगी—**कुन्दन** थी तो नादान—मारे ख़ौफ़के कांपती थी—मगर उसवक्त दिमाग़ी ख़्यालात की ताक़त ने उसके क़दमों को रवां करदिया—आहिस्तह २ पांव रखतीहुई सीढ़ियों से उतर रही थी—कि इतने में किसीने दबे पांव आकर पीछेसे उसकी पीठमें उँगली लगादी—और कहनेलगा—“कुन्दन”—**कुन्दन** ने पलटकरदेखा—देखकर पहचाना—**नगेन्द्रो**—उसरोज़ **कुन्दन** अपनी जान न देसकी—

ओ—**नगेन्द्रो** ! तुम्हारी वह नेकचलनी क्याहुई—तुम्हारा वह ज़ब्त कहां गया—क्या **सूरजमुखी** की बे इन्तिहा मोहब्बत का भी यही फल था—अफ़सोस अफ़सोस—देखो—तुम चोर हो—चोरसे भी ज़ियादह ख़राब—चोर

सूरजमुखी को क्या नुक़सान पहुँचाता—बहुत करता उसका गहना पाता चुरालेता—मगर तुम तो उसकी जानलेने की फ़िक्रमें आयेहो—चोर को सूरजमुखी कभी कुछ नहीं देती—तब भी अगर वह चोरीकरे तो चोर कहलाये—और तुमको सूरजमुखी ने सब कुछ देदिया—तब भी तुम उस ग़रीब की जान लेनेके लिये आये हो—नगेन्द्रो—तुम अगर मरजाते तो अच्छा था—अगर हिम्मत हो तो डूबमरो—

और अफ़सोस—हज़ार अफ़सोस—कुन्दन—चोरके हाथ लगादेने से तुम्हारे सारे बदन में राशह क्यों पड़गया—अफ़सोस—अफ़सोस—कुन्दन चोरकी बातें सुनकर तुम्हारे रोंगटे क्यों खड़ेहोगये—कुन्दन—देखो—तालाब का पानी कैसा साफ़हैं—हवाके झोंकों से पानी के नीचे तारे कांपते हुये मालूम होतेहैं—तुमभी

चांद्की तरह पानीके नीचे क्यों नहीं जाती—क्यों—डूबोगी—डूबमरोना—कुन्दन मरना नहीं चाहती—

चोर ने कहा—"कुन्दन क्या कलकत्ते जाओगी"—

कुन्दन ने जवाब न दिया आंखैं बन्द्करलीं मगर मुँहसे न बोली—

चोर—कुन्दन—क्या खुशीसे जातीहो?—

"खुशीसे"—इसमें क्या शक ! कुन्दनफिर न बोली—

चोर—कुन्दन—रोती क्यों हो?—

कुन्दन और ज़्यादह रोनेलगी—नगेन्द्रो ने यह देखकर कहा—"कुन्दन—सुनो—न मालूम किन किन मुसीबतों से मैंने अबतक ज़ब्त किया—मगर अब ताब नहीं रही—मैं खुद अपनी तबीयत से बराबर लड़तारहा—मगर

आख़िरको हारगया—ख़ाली हाराही नहीं ब-ल्कि ज़लील भी हुआ—शराबी होगया—अब ताब नहीं—तुमको किसीतरह छोड़ नहीं सक्ता-सुनो—कुन्दन बेवाओं की शादी रायज़ होग-ईहै— मैं तुम्हारे साथ शादी करूंगा—तुम्हारे कहनेभरकी देर है"—

इस मर्तबा कुन्दन ने जवाब दिया—कहने लगी—"नहीं"—

फिर नगेन्द्रो ने पूछा "क्यों—क्या रांड़ों की शादी नाजायज़ है"—

कुन्दन—नहीं—

नगेन्द्रो—तो फिर इनकार क्यों—बोलो—बताओ—क्यों मेरी ब्याहता बीबी बनोगी—

मुझसे मोहब्बत करोगी ?—

कुन्दन—नहीं—

नगेन्द्रो ने मोहब्बत भरे अल्फ़ाज़ में ह-

ज़ारों तरीक़ों से कहा मगर कुन्दन ने हां न की—उसवक़्त नगेन्द्रो ने खुशबू से बसाहुआ साफ़ शफ़्फ़ाफ़ तालाब का पानी देखा—तारोंका अक्स देखा—दिलमें सोचा कि इसमें आराम करना कैसा—

कुन्दन ने दिलही दिलमें जवाबदिया—"नहीं इस वजहसे नहीं कि बेवाकी शादी शास्त्रों की रू से जायज़है—तो फिर वह क्यों न डूबमरी—ऐसा साफ़ तालाब—ठण्डा पानी—उसमें तारों का अक्स—कुन्दन क्यों न डूबमरी—

सत्तरहवां परिच्छेद

हरीदासी जोगिन बाग़वाली कोठीमें पहुँच-कर देवेन्द्रो बाबू होगई—एक जानिब हुक्का सुन्दरी अपना मुँह बढ़ायेहुये थी कि मुझे प्यार करलो—दूसरी जानिब अश्शाकुमारी

(अंग्रेज़ी शराब) शीशमहल से अपना यौवन दिखाकर ललचाती थी कि मेरे मज़े लूटो— सामने दो चार मुफ़्तख़ोरे भूखी बिल्लियों की तरह मुँहमें पानी भरेहुये बैंठे थे—

हुक़्का सुन्दरी कहरही थी—"देखो देखो—मैं मुँहबढ़ाये हूँ इधर रुख़ करो अक्शाकुमारी कह रही थीं"—पहले मेरी ख़ातिर करो—देखो मेरी सुनहली रंगतदेखो—इधर आओ—

मुफ़्तख़ोरों की निगाहें कहरही थीं—"कुछ इधर भी"—

देवेन्द्रो ने किसीको मायूस न किया—हुक़्का मुँहसे लगाया—उसकी मोहब्बत धुवां होकर शिरपर मंडराने लगी—अक्शा की ख़ातिर को वह सर पर चढ़नेलगी—भूखी बिल्लियों को भी कुछ हिस्सा मिलगया वहभी ख़ुशामद के मारे मेंव २ करनेलगे—

इतने में सुरेन्द्रो वहां आया मुसाहिब लोग खिसकगये–मिज़ाजपुर्सीकेबाद सुरेन्द्रो ने पूछा –"आज फिर तुम कहां गयेथे" –

देवेन्द्रो–खूब इसक़दर जल्द तुम्हें ख़बर पहुँचगई–

सुरेन्द्रो–यही तो तुम्हारी भूल है–तुम समझतेहो कि तुम्हारी हरकतों की किसी को कानों कान ख़बर नहीं होती मगर यहां घर२ चरचे होते हैं–

देवेन्द्रो– ख़ैर–होने दो मुझे डर किसका है–मुझे किसी की परवा नहीं–

सुरेन्द्रो–यही ढिठाई तो क़यामत है–अगर तुम्हें दुनियां की लाज होती तो हमें भी उम्मैद पड़ती कि कभी न कभी सँभल जाओगे–अगर आंखों में हया बाक़ी होती तो क्यों जोगिन बनकर घर २ मारे २ फिरते–

देवेन्द्रो—मगर भाई कैसी परीया जोगिन बनीथी—तुम देखते तो कलेजा थामके रहजाते—

सुरेन्द्रो—जी हां—इसमें क्या शक—अगर मैं देखपाता तो ऐसे चाबुक रसीद करता कि सारा जोग भूल जाता—(देवेन्द्रो के हाथ से शराब का गिलाश लेकर) अभी ठहर जाओ—जबतक हवास बाक़ी हैं दो चार बातें सुनलो—फिर यह सब ढकोस जाना—

देवेन्द्रो—कहो भाई कहो—आज तो बड़े कडुवे तेवरहैं—कहीं हेमवती की हवा तो नहीं लगगई—

सुरेन्द्रो—मज़ाक़ जानेदो—यह बताओ कि किसे तबाह करने की फ़िक्र में जोगिन बने थे—

देवेन्द्रो—क्या तुम्हें इसकी ख़बर नहीं—ताराचरण मास्टर की बेवा नगेन्द्रो के घरमें रहती है—उसी को देखने गया था—

सुरेन्द्रो—अफ़सोस तुम्हारी अक़्ल कहांगई—तुम्हें लावारिस रांड़पर भी रहम न आया—देखो—देवेन्द्रो—तुम ऐसे बद चलन—ऐसे बेरहम—ऐसे बदकार हो गये हो कि अब मेरी तुम्हारी दोस्ती निभती नहीं मालूम होती—

यह सुनकर पहिले तो देवेन्द्रो चुपसा हो रहा—फिर भारी आवाज़ से कहा—

"भाई मुझसे ख़फ़ा न होना—मेरा दिल मेरे क़ाबू में नहीं—मैं सब कुछ छोड़सक्ता हूँ—मगर इस सुन्दरी की हवस मेरेदिल से नहीं जा सक्ती—जिसरोज़से मैंने वह प्यारी २ सूरत देखी है उसी दिन से बेचैन हूँ—जिस तरह बोख़ार की शिद्दत में मरीज़ को प्यास बे ताब करतीहै—उससे ज़्यादह इस हसीना की ख़्वाहिशने मुझे बे ताब कर रक्खाहै—सैकड़ों फ़िकरें कीं कि कहीं वह मोहनी सूरत देख मिलै—मगर

कुछ न हुआ—मजबूर होकर जोगिन बनना पड़ा मगर तुम अन्देशा न करो क्यों कि वह औरत निहायत पाक बाज़है"—

सुरेन्द्रो—तो तुम वहां जाते क्यों हो—

देवेन्द्रो—सिर्फ़ आंखें सेंकने के लिये— उसे देखकर और उससे बात चीत करके मुझे बड़ी तसकीन होजाती है—

सुरेन्द्रो—सुनो मैं मज़ाक़ नहीं करता—इस वक़ मैं तुम से साफ़ कहे देता हूँ—कि अगर तुम ने यह बदकारी न छोड़ी और फिर उसी राह चले तो आज से मेरी तुम्हारी मुलाक़ात ख़त्म—

देवेन्द्रो—तुम से बढ़कर मेरा कोई दोस्त नहीं—अगर मेरी सारी रियासत तबाह हो जाय तब भी मैं तुम्हारी दोस्ती को क़ायम रक्खूँ—लेकिन अगर तुम भी छूट जाओ तब भी मैं कु-

न्दन के देखनेकी ख़्वाहिशको नहीं छोड़ सक्ता—

सुरेन्द्रो—बेहतर योंही सही आज से मेरे तुम्हारे मरासिम मौकूफ़—

यह कहकर सुरेन्द्रो चलागया—थोड़ीदेर तक देवेन्द्रो को बहुत पेच व ताब रहा—फिर जी में सोचा कि "इस दुनियां में कौन किस का होता है—जाने भीं दो"—यह सोचकर एक गिलाश भर बरांडी और चढ़ाई और आराम कुर्सी पर लेट गया—

इतने में खिड़की की तरफ़से "खड़ २ की आवाज़ सुनाई दी ऐसा मालूम होताथा कि कोई शख़्स झिलमिली उठाये देख रहाथा और फिर यकायक झिलमिली गिरादी—देवेन्द्रो ने कहा कौन—कुछ जवाब न मिला—उठकर खिड़की के पासगया—खोल कर देखा तो मालूम हुआ कि कोई औरत तेज़ २ जार-

ही है—देवेन्द्रो खिड़की से नीचे कूदपड़ा और लड़खड़ाते हुये उस औरत के पीछे दौड़ा—

वह औरत अगर चाहती तो भाग सक्ती थी—मगर वह अपनी खुशी से न भागी या अँधेरे में राह न मिली—इसका ठीक हाल हम नहीं बता सक्के—देवेन्द्रो ने उसे जा पकड़ा—अँधेरे में सूरत देखकर पहचान न सका—कहने लगा—"कहो—किस पेड़ से उतरी हो"—कुछ जवाब न मिला—देवेन्द्रो ने फिर गौर से उस के मुँह की तरफ़ देखा मगर पहचान न सका—कहने लगा—"परी है कि ज़िन है कि साया है तू"—फिर कुछ जवाब न मिला—तो कहा—"ख़ैर कोई सही—आओ—थोड़ी सी शराब पीती जाओ"—यह कहकर उसे पकड़ेहुये अपनी कोठी में लाया और शराब का गिलाश हाथ में दिया—

उस औरत ने शराब न पी–गिलाश अलाहिदा रखदिया–

इधर देवेन्द्रो एक लम्प उठालाया और उस औरत के मुँहके पास लाकर खूब ग़ौर से देखा न पहचाना–पूछा कि बताओ तो आख़िर तुम हो कौन–

उस औरत ने जवाब दिया–"मुझे हीरा कहते हैं"–

"हुर्रा!–हुर्रा!–"वांह री हीरा।"–यह कहकर देवेन्द्रो उछल पड़ा–पहले बहुत झुककर सलाम किया–फिर शराब का गिलाश हाथ में लेकर हीरा के सामने गाने लगा–

पीलो इसे क्या शराब ये
क्या फूलहै क्या गुलाबहै ये

हीरा जोगिन के पीछे२आकर यह दरियाफ़्त करगई थी कि यह जोगिन नहीं–देवेन्द्रो

है मगर उसको यह फ़िक्र थी कि इस बात को दरियाफ़्त करै कि वह किस चक्कर में योगिन बनताहै—इसी लिये अँधेरा होते ही चुपके २ बाग़ में आई और दबे पांव जाकर खिड़की के पास खड़ी होगई—वहां से उसने देवेन्द्रो की सारी बातैं सुनी—जब जाने लगी तो इत्तिफ़ाक़न् झिलमिली हाथ से छूटपड़ी और वह खड़ २ की आवाज़ हुई जिसकी वजह से वह पकड़ लीगई—

इस वक़्त हीरा भागने की फ़िकर में थी—देवेन्द्रो ने कहा कि यह शराब पीजाओ—हीरा ने जवाब दिया कि आप तो पीजिये—देवेन्द्रो वह गिलाश भी चढ़ागया—नशेने ज़ोर जो बांधा तो आंखैं बन्द करके लेटगया—हीरा ने मौक़ा जो पाया तो वहां से चलदी—

उसरात को हीरा अपने घर पलट गई—

सुबह जाकर सूरजमुखी से सारा हाल बयान किया—हां एक बात छिपाडाली—यह न कहा कि कुन्दन बेक़सूर है—सूरजमुखी ने भी इस बात को न पूछा हीरा ने वह बात क्यों छिपाई—इसका हाल आइन्दह मालूम होजायगा—सूरजमुखी को जब कुल हाल मालूम हुआ तो मारे गुस्से के आंखें सुर्ख़ होगईं—बदन में राशा सा पड़गया—कमला ने भी सुना सूरजमुखी ने कुन्दन को बुलाकर कहा—

"कुन्दन हमें मालूम होगया कि हरी दासी जोगिन कौन है—हमको पता चलगया कि वह तेरा यारहै—और जो कुछ तू है उसका हाल भी खुलगया—हम ऐसी औरत को अपने घर में नहीं रखते—तू अभी इस घर से दूर हो—नहीं तो हीरा तेरा झोंटा पकड़के बाहर निकाल देगी"—

कुन्दन का चेहरा फ़क़ होगया—जिस्म कांपने लगा—कमला ने देखा कि वह ग़श खाके गिरा चाहती है—उठकर सँभाल लिया और लेजाकर उसके कमरे में पहुँचाया—वहां बैठकर कुन्दन को तशफ़्फ़ी देतीरही—कहने लगी—"वह जो कुछ ख़्याल करें—मगर मुझे इनबातों का यक़ीन नहीं होता"—

अट्ठारहवां परिच्छेद॥

आधीरात के वक़्त जब सारा घर सोगया था तो कुन्दन अपने कमरे के दरवाज़े खोल कर बाहर निकली—ख़ाली एक कपड़ा पहने हुये उसने सूरजमुखी का घर छोड़ा—उस आधीरातके वक़्त ख़ाली एक कपड़ा पहनेहुये वह लावारिस १७ बरसकी सुन्दरी दुनियां के समुद्रमें तनहा फांद पड़ी—

घमसान अँधेरी राति–आसमान पर बादल–रास्ता किधरहै–

यह बतायेगा कौन कि राह किसतरफ़है–कुन्दन कभी उस घरके बाहर न निकली थी–उसे क्या मालूम कि कौन रास्ता किसतरफ़ गयाहै– और वह जायगी कहां–

आलीशान महलों के किनारे २ अँधेरीरात के परदे में कुन्दन फिरनेलगी–ख़्वाहिश यह पैदाहुई कि जिसमहल में नगेन्द्र आराम करताहै उसकी खिड़की से जो रोशनी बाहर आतीहै उसे देखकर जाय– उस रोशनी को देखकर बेचैन दिलको किसी क़दर तसकीन होगी–

उस ख़्वाबगाह को वह पहचानती थी–फिरते २ उधर पहुँची–खिड़की के शीशों से रोशनी बाहर आरही थी–अन्दर लम्प जल

रहाथा—पतंगे उड़ उड़कर खिड़की से टकराते थे—रोशनीतक पहुँचने की राह न मिलतीथी—इन पतंगो की हालत देखकर **कुन्दन** का दिल दुखा—हमदर्दी—

कुन्दन टकटकी बांधेहुये इस रोशनी को देखरही थी—उसको छोड़कर न जासकी—उस ख़्वाबगाह के सामने कई एक मौलसिरी के दरख़्तथे उन्हीं के सायेमें बैठीहुई **कुन्दन** उस खिड़की की तरफ़ देखरही थी—चारोंतरफ़ अँधेराघुप—दरख़्तों में बेशुमार जुगनू चमकते थे—आसमानपर काले २ बादल घिरते चले-आते थे—ऐसी अँधेरी में मोलसिरी के दरख़्त देवोंकी तरह खड़े मालूम देते थे—हवा के झोंकोंसे यह काले २ देव **कुन्दन** के सरपर अपनी शैतानी ज़बान में बातें कररहे थे—मगर आहिस्तह २—रातकी स्याहीसे शायद वहभी

ख़ौफ़ खातेथे-मकानोंपर उल्लू बोलते थे-गांव में इधर उधर कुत्ते भूँकते थे-कुन्दन उसी रोशनी की तरफ़ देखरही थी-

आहिस्तह आहिस्तह-उसखिड़कीकेदरवाज़े खुले-एक मर्दकी मूरत सामने आई-ऐं-!यह तो नगेन्द्रो की मूरतहै-नगेन्द्रो-अरे नगेन्द्रो-कहीं वह मोलसिरी के तले बैठीहुई कुन्दन को देखपाता-या उसके दिलकी धड़कन की धड़ धड़ आवाज़ सुनपाता-हाय बेचारी कुन्दन इस ख़ौफ़से पूरे तौरपर ख़ुशभी नहीं होसक्की कि थोड़ीदेर में वह मूरत फिर ग़ायबहोजायगी-नगेन्द्रो तुम चिराग़ की तरफ़ खड़े होजावो-पुस्त करके क्यों खड़ेहुये-एक मर्तबः चिराग़के सामने खड़े होजाओ-

हट न जाना-देखो-कुन्दन बड़ी मुसीबत ज़दाहै-

वह देखो—उल्लू बोलउठा—अगर तुम हटे तो **कुन्दन** डरजायगी—देखा—वह बिजली चमकी—तुम हट न जाना **कुन्दन** डरजायगी वह देखो बादल गरजने लगे—पानी बरसेगा—**कुन्दन** कहां पनाहलेगी—

देखो तुमने खिड़की खोली और सैकड़ों पतंगे तुम्हारी ख़्वाबगाह में घुसगये बेचारी **कुन्दन** सोचती है कि वह कौनसा सबाब का कामहै जिसके बदले में मनुष्य पतङ्गा होसक्ता है—पतङ्गा जलमरता है—

कुन्दन भी यही चाहती है—दिलही दिल में सोचती है—"मैं जली तो मगर मरी क्यों नहीं"—

नगेन्द्र! खिड़की बन्दकरके हटगया—बेरहम! इसमें हर्जही क्या—! नहीं—रात ज़्यादह गई—तुम अब न जागो सोरहो—तबीयत ख़-

राब होजायगी—कुन्दन मरै तो मरनेदो—तुम्हारे सिरमें दर्द न हो—बस यही कुन्दन की ख़्वाहिश है—

नगेन्द्रो के हटतेही खिड़की में अँधेरासा होगया—कुन्दन ने आंखें मल मलकर देखा मगर कुछ दिखाई न पड़ा—जब देखते २ थक गई तो कुन्दन उठ खड़ीहुई—सामने जो राह मिली उसीपर चलदी—

चली कहां ? मोलसिरी के देवों ने हिल २ कर पूछा—"कहां चली"—ताड़ों ने तड़ तड़ातीहुई आवाज़से पूछा—"कहां चली"—खिड़की हवासे हिलकर बोली—"जातीहो तो जाओ—अब मैं नगेन्द्रो को न दिखाऊँगी"—तिसपर भी नादान कुन्दन मुड़मुड़कर उधरही देखती जाती थी—

कुन्दन चली—चली—हाय बेचारी चली—

बादलों की स्याही और भी बढ़गई काले बादलोंने आसमानपर भी रातकरदी—बिजली हँसी—फिर हँसी—और फिर—हवा जन्नाटेसे चलनेलगी—बादल गरजनेलगे—हाय कुन्दन कहां जायगी—

आंधी उठी—पहले आवाज़ आई—फिर गर्द उड़ी—फिर दरख़्त ज़ोर २ से हिलनेलगे—इतनेमें टप टप बूंदें आगईं—हाय कुन्दन कहां जायगी —

बिजली की रोशनी में कुन्दन को रास्ते के किनारे एक मामूली मकान मालूमहुआ—दरवाज़ेपर एक छोटासा छप्पर पड़ाहुआ था—कुन्दन वहीं दरवाज़े के पास बैठगई—केवाड़ों में धक्का जो लगा तो खड़के—मकानवाली ने समझा कि हवाहै—मगर दरवाज़ेपर एक कुत्ता रहा करता था—वह भूंकउठा—उसवक्त मकान

वाली को खौफ़हुआ—दरवाज़ा खोलकर देखा तो एक औरत—पूछा—"तुम कौनहो"—कुन्दन ने जवाब न दिया—मकानवाली ने फिर कहा "अरे कौन है"—

कुन्दन कहनेलगी"—पानी के मारे खड़ी होगई"—

मकानवाली नें घबरा कर पूछा—"कौन—कौन—फिर तो बोलो"—

कुन्दन ने कहा—"पानी के मारे खड़ी हो-गई"—मकानवाली ने कहा—"यह आवाज़ तो मैं पहचानती हूँ—घरके अन्दर तो आओ—कुन्दन घरमें गई—चिराग़ के सामने कुन्दन देखती है कि हीरा—हीरा कहने लगी—"मैं समझगई कि तुम क्यों भागआई—कुछ डर नहीं मैं किसी से न कहूँगी—तुम दो चार रोज़ यहीं रहो"—

उन्नीसवां परिच्छेद ॥

हीरा का मकान मिट्टी की दीवारों से घिरा हुआ—दो साफ़ बड़े बड़े कमरे रहने के लिये—सहन में जूही—बेला—चमेली—और गुलाब के पेड़ लगे हुये— बाबू के बाग़चे का माली खुद आकर यह पेड़ लगागया था—अगर हीरा चाहती तो बाबू का सारा बाग़ चा उठकर उसी के घर चलाआता—माली का फ़ायदह सिर्फ़ इस क़दर था कि हीरा अपने हाथ से चिलम-भर कर उसे पिला देती थी—काली २ चूड़ियां पहने हुये हाथ से वह माली के हाथमें नारियल दैदेती थी—माली अपने घर जाकर रातको इसीख़्याल में मगन रहा करता था—

मकान के एक कमरे में हीरा रहती थी—और दूसरे में उसकी नानी—हीरा ने उस रात

को अपने बिछौने पर कुन्दन को अपने साथ लेटाया—कुन्दनलेटी—मगर नींद न आई—दूसरेदिन भी कुन्दन वहीं रहीं—मगर छिपी हुई—सुबह जब हीरा बाबूके यहां गई तो अपने कमरे को बाहर से बन्द करगई ताकि उस की नानीको ख़बर न हो—दोपहर को जब नानी बाहर नहाने गई उंसवक्त आकर हीरा ने कुन्दन को नहलाया खिलाया—और फिर उसी तरह कमरेमें बन्दकरके चलीगई—रातको जब हीरा पलटी तो दोनों उसी कमरे में लेट रहीं—

इतने में आहिस्तह २ किसीने दरवाज़ा खटखटाया—हीरा मुताज्जिबहुई कि कौनहै—बाबू का दरबान कभी २ रात को बुलाने आता था मगर वह दरवाज़ा ज़ोर से खट खटाता था—हीरा ने जाकर दरवाज़े को खोला—देखा तो मालती ग्वालिनी—यह हीरा की बड़ी

दोस्त थी—देवीपूर में देवेन्द्रो के पड़ोस रहती थी—कोई तीस बत्तीस बरसकी उमर—रंगत साफ़ मगर धूप से सौंलाईहुई—चपटी नाक—बाछों में पान की सुरख़ी—वह देवेन्द्रो की नौकर न थी मगर जो काम और किसी से न होता उसको करने के लिये तय्यार रहती थी—हीरा ने पूछा—"इस वक़्त कहां"—

मालती ने आहिस्तह २ कहा कि तुझे देवेन्द्रो बाबू ने बुलायाहै—

हीरा ने हँसकर कहा—"क्यों—क्या चौथ तुझ को भी मिलैगी"—मालती ने हीरा के एक घूँसा लगाकर कहा—"तेरे जी में जो पाप हो उसे तू जाने—मगर इस वक़्त चल"—हीरा यही चाहती थी—कुन्दन से जाकर कहा कि "बाबू के यहां से आदमी बुलाने आया है जाती हूं"—यह कहकर उसने चिराग़ गुल कर

दिया—अँधेरे में बनाव सिंगार करके मालती के साथ चलदी—देवेन्द्रो की कोठी में हीरा अकेली गई—देवेन्द्रो ने कहा—

"हीरा—उसदिन शराब के नसे में मेरी समझ में कोई बात न आई तुम उसदिन कहां आईं थीं—इसीबात के पूँछनेके लिये मैंने तुम्हें बुलायाहै"—

हीरा—मैं तो सिर्फ़ आप को देखने आई थी—

देवेन्द्रो हँसा—कहने लगा—"तुम हो बड़ी अक्लमन्द—नगेन्द्रो की बड़ी खुश क़िस्मती है कि तुम ऐसी दासी पाई—मुझे मालूम होगया कि तुम्हारीदासी जोगिन का पता लगाने आईं थीं—तुम्हें यह भी मालूम है कि मैं वहां जोगिन बनकर क्यों गया था—मैं भी तुमसे कोईबात न छिपाऊंगा—इसमें शक नहीं कि तुमने अपने

मालिक का काम करके इनाम पाया होगा—अच्छा तो मेरा भी एक काम कर दो—मैं भी इनाम दूंगा"—

जिसकी तमाम हरकतें गुनाहों से भरी हों उसका साफ़ साफ़ हाल लिखना मुनासिब नहीं—बहर हाल देवेन्द्रो ने हीरा को बहुत कुछ लालच देकर कहा कि किसी तरकीब से कुन्दन को उनके पास तक पहुँचादे—यह बातें सुनकर हीरा की आंखें मारे गुस्से के सुर्ख़ होगई वहां से उठ खड़ी हुई और कहने लगी—"आपने मुझे ग़रीब समझकर यहबातें मुझसे कीं—मैं इनबातों का जवाब नहीं देसक्ती—मैं जाकर अपने मालिकसे कहूँगी—वह जैसा चाहेंगे जवाब देंगे"—

यह कहकर हीरा वहां से चलदी—देवेन्द्रो बहुतही ना उम्मैद हुआ—थोड़ीदेर सोचता

रहा फिर दो गिलाश भरकर बरांडी उड़ाई–

बीसवां परिच्छेद ॥

सुबह उठकर हीरा अपने काम पर गई– नगेन्द्रो के मकान में दोदिन से बड़ी हल चल मची थी–कुन्दन का पता न था–घर में तो सब को मालूम हुआ कि कुन्दन ख़फ़ा होकर चलीगई–पास परोस वालों में किसी को यह हाल मालूम हुआ और किसी को नहीं–नगेन्द्रो ने भी सुना कि कुन्दन घर छोड़कर चलीगई–क्यों चलीगई–इसका हाल उससे किसी ने न कहा–

नगेन्द्रो ने ख़्याल किया कि उसने जो बातें कुन्दन से की थीं उन्हीं के ख़्याल से शायद कुन्दन ने उनके घरमें रहना मुनासिब न समझा–अगर यहीबात थी तो कमला के साथ

क्यों न गई रंज के मारे नगेन्द्रो की अजीब-हालत होगई–किसी की हिम्मत न पड़ती थी कि उसके पास तक जाये–

सूरजमुखी का कोई क़सूर भी उसको न मालूम हुआ मगर योंही सूरजमुखी से मिलना जुलना मौकूफ़ करदिया–इधर उधर कुन्दन का पता लगाने के लिये खुफ़िया तौर पर औरतों को रवाना किया–

सूरजमुखी ने यों तो गुस्सा या हसद की वजह से बुरा भला कहा था जब यह मालूम हुआ कि कुन्दन घर छोड़कर चलीगई तो उसको बहुत रञ्ज हुआ–कमला ने भी कहा कि देवेन्द्रो शराबी आदमी डींग की लेता होगा–कुन्दन बे क़सूरथी–अगर कोईबात होती तो कभी न छिपती–और फिर कुन्दन की ऐसी तबीयत न थी कि वह बदराह हो

सक़ी–सूरजमुखी को भी यक़ीन होगया कि कुन्दन की कोई ख़ता न थी–इस वजह से उसे और भी ज़्यादह अफ़सोस हुआ–अलावह इसके नगेन्द्रो के गुस्से ने सूरजमुखी को और भी रञ्जीदह करदिया–उसने कुन्दन की तलाश में इधर उधर लोगों को भेजा–

कमला ने कलकत्ता जाने की तय्यारियां कीं–अपने गले का हार निकालकर सब घर वालों को दिखाकर कहा–

"जो कोई कुन्दन कोले–आयेगा उसे मैं यह हार दूंगी"–

कमबख़्त हीरा यह सब बातें देखती सुनती थी मगर कुछ न कहती थी–कमला का हार देखकर एक मर्तबः जी में लालच आया मगर फ़िर ज़ब्त किया–उस रोज़ भी दो पहर को जाकर हीरा ने कुन्दन को खाना खि-

लाया और रातको उसीतरह दोनों ने उसी कमरे में बशर की—मगर नींद न कुन्दन को आई न हीरा को—कुन्दन तो अपनी मुसीबतों में थी नींद क्योंकर आती—मगर हीरा भी किसी फिकिर में सो न सकी—लेटे लेटे दिलही दिल में खुद बखुद योंबातें कररही थी—

"हीरा—अरे हीरा—तेरी सूरत भी भोली भाली है—उमर भी कम—फिर दिलमें यह मक्कारी क्यों—बात यहहै कि किस्मत ने मेरेसाथ बुराई की—मैं औरों के साथ बुराई करना चाहती हूँ—अब करना क्या चाहिये—इत्तिफ़ाक़ से मौक़ा अच्छा हाथ आया है अगर कोईबात बनपड़े तो नसीब खुलजायें—अगर कुन्दन को नगेन्द्रो के यहां पहुँचादूँ तो कमला हार देगी—सूरजमुखी कुछ दे निकलेगी—और बाबू से भी कुछ न कुछ लेही मरूंगी—अगर

कुन्दन को देवेन्द्रो के सिपुर्द करदूं तो वह भी बहुत सा रुपिया देगा—मगर यह बात तो जीते जी हो नहीं सक्की—न मालूम देवेन्द्रो कुन्दन में क्या देखता है—मैं मेहनत मज़दूरी करती हूँ—अगर मैं भी अच्छा खाऊं—अच्छा पहनूं—चार दीवारी में बन्दर हूं तो कुन्दन से हज़ार दर्जः अच्छी निकलूं—और इस मिन मिनाती हुई रोनी सूरतवाली कुन्दन को देवेन्द्रो के साथ क्या लुत्फ़ आयेगा कीचड़ न होनेसे कमल नहीं फूलता—इसीतरह कुन्दन के बग़ैर देवेन्द्रो में मोहब्बत नहीं आती—

यह अपनी अपनी क़िसमत—मेरे नसीबों में यही बदाथा—मुहब्बत का नाम सुनकर मैं हँसती थी—जी में सोचती थी कि मैं कभी किसी को न चाहूंगी—बड़े बोलका सिर नीचा—गईथी दूसरे का चोर पकड़ने ख़ुद अपना दिल खो

आई—वाह कैसा खूबसूरत चेहरा पाया है—आँखें कैसी रसीली—आवाज़ कैसी प्यारी—दुनिया में कहीं ऐसे इनसान होतेहैं—और मज़ादेखो—मर्दुआ मुझसे कहताहै कि कुन्दन को गांठ लाओ—यह बात कहनेके लिये और कोई न मिला—जी में तो आया कि मर्दुवे का मुँह नोचलूं—हाय उसके मुँहमें हाथ लगाने से भी मज़ा आता—ख़ैर—ज़ोकुछ हो—मैं यह फ़िक्र तो ज़रूर करूंगी कि कुन्दन उसके हाथ न लगै—अगर नगेन्द्रो के यहां कुन्दन को पहुँचादूं तो देवेन्द्रो हज़ार सिरपटकै वहां उसकी दाल न गलैगी—मगर कुन्दन वहां जायेगी क्यों—शायद खुशामद बरामद से चली जाये—एक और बात सोचरहीहूँ—सूरजमुखी को नीचा दिखाउँ—क्यों वह तो मेरे साथ कोई बुराई नहीं करती—मगर उसे देखदेखकर मुझे

जलन होतीहै—वह अमीर मैं ग़रीब—वह रानी मैं बांदी—अगर कोई कहै कि ईश्वरने उसे बड़ा कियाहै—उसका क्या क़सूर—तो मैंभी यह कह सक्तीहूँ कि ईश्वरही ने मुझे जलन दीहै—मेरा क्या क़सूर—अगर उसकी बुराई से मेरा भला हो तो मैं क्यों बाज़ रहूँ—कौन अपनी भलाई नहीं चाहता—तो फिर क्योंकर क्या होगा—कुछ रुपिया चाहिये—अब नौकरी नहीं होती—रुपिया मिलै कहां से—नगेन्द्रो के घरसे—क्योंकर—यहबात तो खुलीहुई है कि बाबू कुन्दन पर मरतेहैं—सूरजमुखी के ख़ातिर से चुपहैं—अगर सूरजमुखी से बिगाड़ करादूं तो फिर कुन्दनही घरकी मालिक होजाय—कुन्दन ठहरी बेवकूफ़—उसे अपने क़ाबू में करके खूब खूब मालमारूँ—कुन्दन को नगेन्द्रो के पास पहुँचादूंगी—मगर जल्दी नहीं—जुदाई में शौक़

बढ़ताहै—शौक़को खूब बढ़लेनेदूं इधर कुन्दन कोभी खूब खुश करलूंगी—नानी को नाते रिस्ते में कहीं भेजदूँ—नहीं तो भेद खुलजायगा—

बदज़ात हीरा उसीतरह की फ़िकरें करने लगी—अपनी नानीको कहीं रवाना करदिया—और कुन्दन को घरमें छिपाकर रक्खा—हीरा का बर्ताव देखकर कुन्दन दिलही दिल में कहतीथी कि हीरा कीसी नेकबख़्त औरत दुनिया में काहेको होगी—

इक्कीसवां परिच्छेद ॥

हीरा एक रोज़ ख़्वाहमख़्वाह अपने साथ की एक दासी कौशिल्या से लड़गई—और जाकर सूरजमुखी से उलटी शिकायत की—सूरजमुखी ने जब हाल दरियाफ़्त किया तो मालूमहुआ कि कौशल्या का कोई क़सूर नहीं

है बल्कि हीरा खुद छेड़कर लड़ी—हीरा तो लड़नेपर तुलीहुई थी कहने लगी—

"कौशल्या को बरखास्त करदो—नहींतो मैं न रहूंगी"—सूरजमुखी को हीरा पर गुस्सा आया—कहनेलगी—

"हीरा—तेरी बहुत खातिर होतीहै—इससे तू सिरपर चढ़नेलगी—अगर तेरा जी जानेको चाहताहै तो जा मैं नहीं रोकती"—

हीरा यही चाहती थी—अच्छा कहकर बाहरचलीगई—झूठमूठ के आंसू बहातीहुई बाबू के पास पहुँची—

बाबू—क्यों—हीरा—रोती क्यों है—

हीरा—हुजूर किसीको हुक्म देदें कि मेरा हिसाब करदे—

बाबू—क्यों हुआ क्या—

हीरा—मुझे जवाब मिलगया—बहूजीने मुझे जवाब देदिया—

बाबू—क्यों—तूने क्या किया था—

हीरा—कौशल्या ने मुझे गालियां दीं—मैंने जाकर बहूसे फ़रियाद की—बहूने उसकी बातका एतबार किया और मुझे जवाबदे दिया—

नगेन्द्रो ने सिर हिलाया—हँसकर बोला—"बात कुछऔरहै—ठीकरबता कि बात क्याहै"—

हीरा—ठीकबात यहहै कि मैं अब न रहूंगी—

बाबू—क्यों—

हीरा—बहूजीकी ज़बान अब बहुत बढ़गई—न मालूम किसको किसवक्त क्या कहबैठें—

नगेन्द्रो ने किसी क़दर बिगड़कर कहा—"यह क्या"—

हीरा जिस मौक़े को ढूंढ़रही थी वह अब हाथआया—कहनेलगी—

"उसदिन कुन्दन को बहूने जो कुछ मुह में आया कहा—ऐसी२ बुरी बातें कहीं कि वह बेचारी घर छोड़कर निकलभागी—हमेंभी डर मालूम होताहै कहीं किसी दिन हमारीभी वही यतन हो"—

बाबू—बहूने क्या कहा था—

हीरा—शर्मके मारे वह बातें मेरे मुँहसे नहीं निकलसक्ती—

यह सुनकर नगेन्द्रो की आंखोंके सामने अँधेरासा छागया—हीरा से कहा—

"आज अपने घरजा—कल बुलालूंगा"—

हीरा का मतलब पूराहोगया—वह इसी-लिये कौशल्या से लड़ी थी—

नगेन्द्रो उठकर सूरजमुखीके पासगया—हीरा भी दबे पांवों पीछे २ चलीगई—सूरज-मुखी को अलाहिदा लेजाकर नगेन्द्रो ने

पूछा—"क्या तुमने हीरा को जवाब देदिया"—

सूरजमुखी ने कहा हां—और हीरा और कौशल्या की लड़ाई का सारा हाल बयान करदिया—

नगेन्द्रो ने पूछा—"और तुमने कुन्दन से क्या कहाथा"—

नगेन्द्रो ने देखा कि सूरजमुखी का मुँह खुश्क होगया—कहनेलगी—"क्या कहा था"—

बाबू—कोई भोंडीबात कही थी—

सूरजमुखी पहले तो चुपहोगई—फिर कहनेलगी—

"तुम्हारे सिवा मेरा कोई नहीं—मेरी दीन व दुनिया तुम्हींसे है—में तुमसे कोई बात न छिपाऊंगी—मेरी ख़ता मुआफ़ करना—मैं सच्चा सच्चा सब हाल कहे देती हूँ"—

सूरजमुखी ने सारा हाल ठीक ठीक बयान

करके कहा—"कुन्दन को सख़्त सुस्त कहकर मैं ख़ुद अपने दिलमें पशेमानहूँ—उसकी तलाशमें बहुतसे आदमी मैंने भेजेहैं—अगर पता मिलजाता तो मैं फिर बोलालेती"—

नगेन्द्रो ने कहा—"तुम्हारी कोई ख़तानहीं तुमने जो बातें सुनी थीं उनको सुनकर कोई शरीफ़ घरकी औरत उसको अपने घरमें न ठहरने देती—लेकिन अगर तुम ज़रा सोच समझकर काम करतीं तो अच्छा होता—यह तो दरियाफ़्त करलिया होता कि वह बातें सच थीं या नहीं"—

सूरजमुखी—उसवक़्त यह ख़्याल न आया—अब सोचती हूँ कि मैंने बड़ी बेवकूफ़ी की—

नगेन्द्रो—उस वक़्त यह ख़्याल क्यों न हुआ—

सूरजमुखी—मेरे दिलमें वहम पैदा होताथा—

यह कहते २ सूरजमुखी नगेन्द्रो के क़दमों के पास ज़मीनपर बैठगई—और उसके दोनों पांव अपने हाथों में लेकर रोनेलगी—फिर आंसुओं को किसी क़दर रोककर कहा—"तुमसे बढ़कर दुनियामें मेरा कौनहै—मैं अपने जीका चोर तुमसे न छिपाऊँगी—मेरी ख़ता मुआफ़ करना"—

नगेन्द्रो ने कहा—"तुम्हें कुछ कहने की ज़रूरत नहीं—मैं जानता हूँ कि तुम्हारे दिलमें यह अन्देशा पैदाहुआ था कि मैं कुन्दन पर फरेफ़्तह हूँ"—

सूरजमुखी—नगेन्द्रो के क़दमों पर मुँह छिपाकर रोनेलगी—

फिर हिम्मत करके आंसू रोके और अपने स्वामी की तरफ़ देखकर कहने लगी—

"मैं अब तुमसे क्या कहूँ—मुझपर जो दुख

गुज़रा है वह मैं तुम से बयान नहीं कर-सक्ती मेरे मरजाने से तुम्हें और ज़्यादह रंज होता इसलिये मैंने अपनी जान नहीं दी—नहीं तो जब मुझे मालूम हुआ था कि तुम्हारे दिल में दूसरे की जगह है उसीवक़्त मेरा जी चाहा था कि मैं मर जाऊं"—

नगेन्द्र थोड़ीदेर तक चुप सन्नाटे में सुनता रहा—फिर एक लम्बी ठण्ढी सांस भर के कहा—

"सूरजमुखी—यह सब मेरा क़सूरहै—मैंने तुमसे दग़ा की—मैं तुमको भूलकर कुन्दन पर—क्या कहूँ—मैंने जो तकलीफ़ उठाई है और जो तकलीफ़ अब उठाता हूँ—इसका हाल तुमसे क्या कहूँ—तुम समझती होगी कि मैंने अपने तबीयत को नहीं रोका—ऐसा ख़्याल न करना—मैंने अपने ऊपर जो जो सख़्तियां गवारा की हैं

उनका तुमको अन्दाज़ा भी नहीं होसक्का–मैं गुनहगार आदमी–अपने दिलको क़ाबूमें न करसका"–

सूरजमुखी ज़्यादा ताब न ला सकी–हाथ जोड़कर कहने लगी–"तुम्हारे दिलमें जो कुछ हो उसे दिलही में रक्खो मुझ से न कहो–मेरे नसीबों में जो कुछ बदाथा हुआ–मैं उसे सुनना नहीं चाहती"–

बाबू–नहीं–तुम्हें सब सुनना पड़ेगा–जब बात छिड़गई तो साफ़ही साफ़ कहदेना अच्छा–मैं अरसे से सोचरहा था कि तुम से कहूँ–सुनो–मैं घरबार छोड़नेवाला हूँ–मरूँगा नहीं–मगर परदेश चलाजाऊँगा–मुझे अब घरबार में खुशी नहीं–तुम्हारे साथभी मुझे अब खुशी नहीं–मैंतुम्हारे क़ाबिल नहीं रहा–मैंतुम्हारे पास रहकर अब तुमको तक़लीफ़ न दूँगा–कुन्दन

को ढूंढ़कर मैं परदेश चलाजाऊँगा—घरबार तुम्हारे सिपुर्दहै—तुम समझ लेना कि रांडहोगई—जिसका स्वामी मेरीतरह गुनहगार हो वह रांड नहीं है तो क्याहै—मैं तुम्हें धोखादेना नहीं चाहता—

मैं अब दूसरे की मोहब्बत में फँसाहूँ—अब मैं जाताहूँ—अगर कुन्दन को दिलसे भूलसकूँगा तो फिर आऊँगा—वरना यही आख़िरी मुलाक़ात है—

यह नश्तर सी बातें सुनकर सूरजमुखी क्या कहती—थोड़ीदेर तक बुतकी तरह सन्नाटे में बैठीरही—फिर ज़मीनपर गिरकर लोटने लगी—जिसतरह शेर शिकारको मारकर देखता है उसीतरह खड़ाहोकर नगेन्द्रो देखताथा दिलही दिलमें कहताथा कि ईश्वर की मरज़ी—मेरा क्या इख़्तियारहै—मैं क्या करसक्ताहूँ—मैं

अगर अपनी जानभी देदूं तो क्या सूरजमुखी की जान बचजायगी—

न—नगेन्द्रो—तुम्हारे मरने से सूरजमुखी की जान तो न बचैगी मगर फिरभी तुम्हारा मरनाही अच्छा था—

थोड़ी देर बाद सूरजमुखी फिर उठबैठी—स्वामी के क़दम पकड़ के कहा—"एक दरख़्वास्त है"—

बाबू—क्या—सूरजमुखी—महीनेभर और ठहर जाओ—अगर इस दरमियान में कुन्दन न मिलै तो तुम जहां जी चाहे चलेजाना—मैं मना न करूँगी—

नगेन्द्रो चुपचाप बाहर चलागया—दिलमें इरादा करलिया कि एक महीना और ठहरेगा—सूरजमुखी भी यह समझगई—

बाईसवां परिच्छेद ॥

हीरा ने नगेन्द्रो के घरका जाना तो छोड़ा मगर वहांकी खबर बराबर लियाकरती थी— जहां उसके घरका कोई नौकर चाकर मिल-जाता उससे खोद २ कर साराहाल पूछलेती—

कुछदिन इसतौर पर गुज़रे—एकरोज़ एक अजीब वाक़िया पेशआया—

इधर मालती हीरा के यहां अक्सर आने जाने लगी—मालती ने भांपा कि उसका आना हीरा को अच्छा नहीं मालूम होता—यह भी देखा कि एक कमरा हमेशा बन्दरहताहै—बाहर से ताला पड़ाहै—एकरोज़ मालती इत्तिफ़ाकसें ऐसे वक्त वहां पहुँचगई कि बाहरसे ताला न पड़ाथा-मालती ने दरवाज़ेको धक्कादेकर देखा—मालूमहुआ कि अन्दर से बन्द है— वह ताड़

गई कि इसमें कोई शख़्श ज़रूर बन्द रहता है–

मालती ने हीरा से तो कुछ न कहा मगर दिलही दिल में सोचने लगी कि कौन शख़्श है–पहले यह ख़्याल गुज़रा कि कोई मर्द है–फिर सोचते २ ख़्याल गुज़रा कि हो न हो कुन्दन यहां छिपी है–क्योंकि कुन्दनके निकल जाने की ख़बर मालती को पहुँचचुकी थी–अब उसे फ़िक्र हुई कि ठीक पता लगाये–

बाबूके मकान से हीरा एक हिरन का बच्चा ले आई थी–वह हमेशह बँधा रहता था–मालती उसकेपासगई–पहले कुछ घास खिलाती रही फिर हीरा से छिपाकर उसकी रस्सी खोलदी–हिरन का बच्चा बाहर निकल भागा–उसके पकड़ने के लिये हीरा पीछे दौड़ी गई–

इधर हीरा तो दौड़ी हुई बाहर गई–उधर मालती ने झूठ मूठ रोना शुरू किया–रो रो-

कर कहने लगी—"हीरा—अरे हीरा—हाय इसे क्या होगया"—यह कहकर रोतीहुई गई और जिस कमरे में कुन्दन रहती थी—उसके दरवाज़े में धक्का देकर कहा "कुन्दन—कुन्दन—जल्दी आओ—हाय देखो तो हीरा को क्या होगया"—कुन्दन ने घबराकर दरवाज़ा खोलदिया—मालती उसको देखकर खिल खिला पड़ी—

कुन्दन ने फिर दरवाज़ा बन्द करलिया—डरके मारे यह हाल हीरा से भी न कहा—

मालती ने जाकर देवेन्द्रो को खबर की—देवेन्द्रो ने दिल में ठान ली कि हीरा के मकान पर जाकर कुछ न कुछ मतलब निकालेगा—उस रोज़ एक पार्टीथी—न जासका—दूसरे दिन जायेगा—

तेईसवां परिच्छेद॥

इस ज़माने में कुन्दन पिंजड़ेकी पक्षी थी जो हमेशह चञ्चल होतीहै-

नदियां अलग २ धीरे धीरे जातीहैं-जब दोनों के मिलने से एक धारा होजाताहै तो बहाव बढ़जाताहै-यही हालत कुन्दनके दिल की हुई-एक तरफ़ शर्म कि जिसघरसे सूरजमुखी ने निकालदिया फिर उस घरमें क्या मुँह लेकर जाय-मगर इस शर्मके धारेपर मोहब्बत का धारा आ गिरा-बड़ी नदीमें मिलकर छोटी नदी ग़ायबहोगई-सूरजमुखीने जो अपमान कियाथा उसका ख़्याल धीरे २ मिटनेलगा-कुन्दन सोचनेलगी-"मैंने वह घर क्यों छोड़ दिया-अगर सूरजमुखी ने दो सख़्तबातें कहीं तो मेरा क्या नुक़सान हुआ-वहां रहने से

नगेन्द्रो की सूरत तो देखनेको मिलती थी—तो मैं क्यों पलट नहीं जाती”—इसीतरह सोचते२ कुन्दन ख़्वाहिशमन्द हुई कि वहां पलटजाये नहीं तो प्राण बचनेकी कोई सूरत नहीं—धड़का यहभी लगा हुआथा कि न मालूम वहां लोग किसतौरपर पेश आयें—

दिलमें जुदाई की ताब न रही—एकरोज़ रात को दो चारघड़ी रात बाकी थी कि कुन्दन चुपके से उठी—हीरा ग़ाफ़िल सोरही थी—कुन्दन ने चुपकेसे दरवाज़ा खोला और बाहर आई—कुछ २ तारों की रोशनी थी दरख़्तों के नीचे २ अँधेराथा—कुन्दन धीरेधीरे नगेन्द्रो के मकान की तरफ़ चली—कुन्दन का कोई ख़ास इरादह न था—हां इतनी फ़िकरथी कि कहीं एक नज़र नगेन्द्रो को देखपाती—अभी उनके घरमें पलटजाने का ठीक न था—कहीं

चोरी छिपे एक निगाह नगेन्द्रो को देखलेती— और फिर हीरा के घर वापस जाती—मगर नगेन्द्रो मिलेंगे कहां—उठते तो सुबह तड़केहैं— शायद कहीं नज़र आयें—

जाते जाते कुन्दन उस महल के क़रीब पहुँची जहां नगेन्द्रो आराम कियाकरता था— कुन्दन ने हरतरफ़ निगाह दौड़ाई मगर नगेन्द्रो नज़र न आया सोचनेलगी कि अभी सोकर नहीं उठे—अभी उठने का वक्त नहीं आया—थोड़ीदेर में उठेंगे—यह सोचकर कुन्दन मौलसिरी के दरख़्त के नीचे बैठगई— और उस ख़्वाबगाह की तरफ़ देखनेलगी—

थोड़ीदेर में सुबहकी ख़बरदेतीहुई ठण्डी २ हवा चली पपीहा बोला—कोयल ने आवाज़ लगाई—थोड़ीदेरमें बहुतसी चिड़ियां चहकारनेलगीं—कुन्दन परेशानहुई—रोशनी फैलने-

वाली थी कोई देख न ले—कुन्दन उठी—

फिर यह ख़्याल गुज़रा कि कभी २ नगेन्द्रो सुबह के वक्त ज़नाने महलके बाग़चे में टहलने जाते थे—शायद वहां हों—वहां देखे बग़ैर कुन्दन वापस न जासकी—मगर उस बाग़चेके चारों तरफ़ अहातेकी दीवारहै—अगर अहाते की खिड़की बन्दहुई तो—खिड़की बन्दहै या खुली उस के दरियाफ़्त करने के लिये कुन्दन उधर गई—

देखा कि खिड़की खुलीहै—कुन्दन हिम्मत करके चलीगई—एक दरख़्त के नीचे जाकर खड़ी होगई—चारोंतरफ़ निगाह दौड़ाई—नगेन्द्रो नज़र न आया—और आगे बढ़कर एक फूलदार दरख़्तों के झुण्डमें खड़ीहोकर देखने लगी—इत्तिफ़ाक़ से सूरजमुखी पूजा के लिये फूल तोड़ने के लिये उधर आई—कुन्दन सहमीहुई जहांकी तहां खड़ीरही—सूरजमुखी—

फूल तोड़ते २ उधर आई—कुन्दनपर निगाह पड़ी—दूरसे न पहिचाना—पूछा—"यहकौनहै"—

कुन्दन मारे ख़ौफ़के न बोली—वहां से हट भी न सकी—सूरजमुखी क़रीब आई—देखा—पहिचाना कि कुन्दन है—मुताज्जिब होकर बोली—"कौन—कुन्दन"—कुन्दन कुछ मुँह से न कह सकी—सूरजमुखी ने कुन्दनका हाथ पकड़कर कहा—"कुन्दन—आवो—बहिन आवो—मैं अब तुम्हें कुछ न कहूँगी"—यह कहकर सूरजमुखी कुन्दनका हाथ थांभे हुये उसे मकानमें लेगई—

चौबीसवां परिच्छेद ॥

उसीरोज़ रात को देवेन्द्र किसी क़दर बेष बदले हुये हीरा के मकान पर कुन्दन की तलाश में गया—यह घर—वह घर—इधर उधर ढूँढ़ा—कुन्दन न मिली—हीरा मुंह में कपड़ा

लगाकर हँसने लगी—देवेन्द्रो ने तीखे होकर पूछा—"हँसती क्योंहै"—

हीरा ने जवाब दिया—"तुम्हारी बेचैनी देखकर—चिड़िया तोउड़गई मेरी ख़ानातलाशी से क्या मिलेगा"—हीरा ने कुन्दन का सारा हाल देवेन्द्रो से बयान करके कहा कि कुन्दन तो नगेन्द्रो के घर पहुँची—अब के उसकी बड़ी ख़ातिर होतीहै—

देवेन्द्रो ने सोचा कि घर पलट जाये—फिर दिलने कहा कि और कुछ बातें पूछलो—आसमान पर दो एक बादल नज़र आये—कहने लगा कि शायद पानी बरसे—हीरा की भी ख़्वाहिश थी कि देवेन्द्रो थोड़ी देर और ठहर जाता मगर तनहा मकान—रातकावक़्—औरतज़ात—अपने मुँहसे क्योंकरकहै कि औरठहरजाओ—देवेन्द्रो ने पूछा क़िघरमेंछतुरीहै—हीरा केयहांछतुरीननिकली—

देवेन्द्रो–थोड़ी देर तुम्हारे यहां ठहरकर देखलूं कि पानी तो नहीं बरसता–कोई कुछ ख़्याल तो न करैगा–

हीरा–ख़्याल क्यों न करेगा–मगर अब तो तुम आही चुके–

देवेन्द्रो–तो थोड़ीदेर बैठलूं–

हीरा ने जवाब न दिया–देवेन्द्रो बैठगया–हीरा एक अच्छासा नारियल निकाल लाई–चिलम भरकर नारियल पीनेको दिया–

देवेन्द्रो ने जेबसे शराबकी शीशी निकाल कर बग़ैर पानी मिलायेहुये बरांडी नोश की–आंखों में नशा जो आया तो ख़्याल गुज़रा कि हीरा की आंखें बड़ी रसीली हैं–

देवेन्द्रो ने हीरा से कहा–"तुमने आंखें ग़ज़बकी पाई हैं"–हीरा किसी क़दर हँसी"–देवेन्द्रो ने देखा कि एक सितार रक्खाहै–पूछा

यह सितार कहांसे आया—हीराने कहा कि एक ग़रीब आदमीसे ख़रीदाथा—देवेन्द्रोने सितार ठीक करके मीठी २ आवाज़ में एक अच्छीसी चीज़ गाई—

हीरा की मोहब्बतभरी निगाहें देवेन्द्रो पर पड़ने लगीं—चेहरेसे चाहत के आसार नुमायां होने लगे—देवेन्द्रो भी ताड़गया—धीरे२ हीरा के हवास ठिकाने हुये—सोचने लगी कि हाय यह तो ग़ैर है—मेरा नहीं—मुझसे मोहब्बत नहीं करता—मैं हज़ार चाहूं मगर बेकार—यह सोचकर देवेन्द्रो से कहा—"तुम अब मेरे घर से जाओ"—देवेन्द्रो को अचम्भासा होगया उसने पूछा—

"हीरा—यह क्या"—

हीरा—तुमजल्दीजाओ—नहींतोमैंजातीहूं—

देवेन्द्रो—ख़ैर तो है—निकाले क्यों देती हो—

हीरा—तुम जाओ—नहीं तो मैं लोगों को पुकारतीहूं-तुम मुझे क्यों तबाह करनेके लिये आये हो—

देवेन्द्रो—इसीको तिया चरित्र कहते हैं—

हीरा—तियाचरित्र—तियाचरित्र ख़राबनहीं होता—मर्दों के चरित्र ख़राब होते हैं—तुमलोगों में धर्म नहीं—दूसरेकी बुराई भलाई का ख़्याल नहीं सिर्फ़ अपने ऐशकी फ़िक्र रहता है—हमे शह तुम लोगों को इसीबात की धुन रहती है कि कौन औरत मिलजाय और तुम उसे तबाह करो—नहीं तो तुम मेरेघरमें क्यों बैठगये—क्या तुम्हें यह फ़िक्र न थी कि मुझे गारद करो—तुमने मुझे बदराह ख़्यालकिया नहीं तो मेरे यहां बेवक्त ठहरनेकी हिम्मत क्योंपड़ती—मगर तुम्हारी भूल है—मैं हज़ार ग़रीब सही मगर बदचलन नहीं हूँ"—

उस वक़्त हीरा की हालत मजनून की सी थी–जोशमें इतना कह तो गई मगर फिर दिल ने अन्दर से टहूका दिया देवेन्द्रो की प्यारी प्यारी घबराई हुई सूरत देखकर फिर हीरा का दिल पिघला–इतना कहकर किसी क़दर पछताई–फिर मुलायमत के साथ बोली–

"सुनो–मैं तुम्हारी सूरत देखकर पागल होगई–मगर मैं बदराह्ये-हीं हूँ–तुम्हें देखकर मेरा दिल खुश होगया था–इसी लिये तुम को मैंने ठहरने न दिया–मगर तुम्हें यह कब मुनासिब थ कि तुम यहां ठहरकर मेरी तबीयत को ख़राब करते"–

देवेन्द्रो ने थोड़ी सी बरांडी और पीकर कहा–"बहुत खूब–बहुत खूब–हीरा तुम तो खूब लिकचर देती हो–एक रोज़ हमारे यहां ब्रह्मो समाज में आकर लिकचर दो"–

हीरा को यह दिल्लगी अच्छी न मालूम हुई—कहने लगी—

"मैं तुम्हारी दिल्लगी के क़ाबिल नहीं हूँ—मैं ग़रीब सही—लेकिन ग़रीबकी मोहब्बत पर हँसना अच्छा नहीं—मोहब्बत करके भी मेरा पांव ऊँचा नीचा न पड़ैगा—मेरी मोहब्बत भी बेकार है—जब तुमको परवाह नहीं तो मैं क्यों दीवानी हुईहूँ जो तुम्हारा ख़्याल करूं—हां अगर तुम्हारे दिलमें भी मोहब्बत पैदाहोजाय तो मैं लौंड़ीहूँ"—

देवेन्द्रो ने देखा कि हीरा कभी कुछ कहती है कभी कुछ—दिलही दिलमें ख़्याल किया कि मैं इसको पहिचानगया इसको जिसकदर चाहूँगा उठाऊँ बिठाऊँगा—इसके ज़रिये से अपना काम निकालूँगा"—

यह सोचकर देवेन्द्रो चलागया—